कक्षा - ९ - हिंदी (बी)

(गद्य खंड)

पाठ - २ दुःख का अधिकार - लेखक : यशपाल (१९०३ - १९७६)

(पाठ का सार)

प्रस्तुत कहानी देश में फैले अंधविश्वासों और ऊँच - नीच के भेद -भाव को बेनकाब करती है | इस कहानी में ऐसी वृद्ध स्त्री का वर्णन है , जो निर्धन होने के कारण अपने बेटे की मृत्यु पर शोक भी नहीं मना सकती | दूसरी तरफ़ एक अमीर महिला का वर्णन किया गया है , जो मृत पुत्र के शोक में अढ़ाई मास से पलंग से उठ भी नहीं सकी | पूरा शहर उसके दुख में शामिल हुआ था | लेखक सोचने लगा कि दुःख मनाने के लिए सहूलियत चाहिये , जो दुर्भाग्यवश निर्धनों की किस्मत में नहीं है |

प्रश्न - १ यशपाल की किन्हीं चार रचनाओं के नाम लिखिए ।

प्रश्न - २ निम्नलिखित शब्दों के पर्यायवाची शब्द लिखिए ।

१) ईमान (२) बदन (३) अंदाज़ा (४) बेचैनी (५) गम

प्रश्न - ३ पाठ में आये शब्द - युग्मों को छांट कर लिखिए ।

प्रश्न - ४ निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए ।

१) बुढ़िया की बहू को क्या हो गया था ?

२) इस पाठ में किस विषय पर व्यंग किया गया है ?

३) पोशाक मनुष्यों को कैसे बाँट देती है ?

४) ' बंद दरवाज़े खोल देना ' का क्या अर्थ है ?

प्रश्न - ५ आशय स्पष्ट कीजिए -

१) शोक करने , गम मनाने के लिए भी सहूलियत होनी चाहिए और ..... दुःखी होने

का भी एक अधिकार होता है ।

२) इनके लिए बेटा - बेटी , खसम - लुगाई , धर्म - ईमान सब रोटी का टुकड़ा है ।

प्रश्न - ६ कोई पाँच शब्द अनुस्वार (.) व अनुनासिक (ँ) के लिखिए ।

प्रश्न - ७ अनुच्छेद पर आधारित प्रश्नों के उत्तर दो ।

निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

उस पुत्र - वियोगिनी के दुःख का अंदाज़ा लगाने के लिए पिछले साल अपने पड़ोस में

पुत्र की मृत्यु से दुःखी माता की बात सोचने लगा । वह संभ्रांत महिला पुत्र की मृत्यु

के बाद अढाई मास तक पलंग से उठ न सकी थी । उन्हें पंद्रह - पंद्रह मिनट बाद

पुत्र - वियोग से मूर्छा आ जाती थी और मूर्छा न आने की अवस्था में आँखों से आँसू

न रुक सकते थे । दो - दो डॉक्टर हरदम सिरहाने बैठे रहते थे । हरदम सिर पर बरफ

रखी जाती थी । शहर भर के लोगों के मन उस पुत्र - शोक से द्रवित हो उठे थे । जब

मन को सूझ का रास्ता नहीं मिलता तो बेचैनी से कदम तेज़ हो जाते हैं । उसी हालत

में नाक ऊपर उठाये , राह चलतों से ठोंकरे खाता में चला जा रहा था ।

१) लेखक ने बुढ़िया के दुःख का अंदाज़ा कैसे लगाया ?

२) पुत्र की मृत्यु के कारण संभ्रान्त महिला की क्या दशा हुई ?

३) संभ्रात महिला को दुःख मनाने का अधिकार क्यों मिला ? शहर के लोगों की क्या प्रतिक्रिया थी?

पाठ - ३ बचेंद्री पाल (१९५४) पाठ - एवेरेस्ट : मेरी शिखर यात्रा

(पाठ का सार)

पहली भारतीय महिला पर्वतारोही बचेंद्री पाल ने प्रस्तुत पाठ में अपनी रोमांचक पर्वतारोहण यात्रा का आत्मकथात्मक रूप में चित्रण किया गया है | लेखिका की यह यात्रा 7 मार्च को शुरू हुई थी , बहुत सारी मुश्किलों का सामना करने के पश्चाद ही लेखिका अपने गंतव्य तक पहुँच सकी | 23 मार्च,1984 को दोपहर 1:07 बजे बचेंद्री पाल एवरेस्ट पर थी उन्होंने सागरमाथे का चुम्बन लिया , दुर्गा माँ का चित्र और हनुमान चालीसा निकाला , उन्हें लाल कपड़े में लपेट कर बर्फ़ में दबा दिया तथा माता - पिता को याद किया | कर्नल खुल्लर ने उनकी इस उपलब्धि पर उन्हें बधाई दी |

प्रश्न - १ निम्न प्रश्नों के उत्तर दीजिए ।

१) तेज़ हवा में पर्वत पर क्या होता है ?

२) किस बात का ख्याल ही बहुत डरावना था ?

३) हिमपात क्या होता है ?

४) दल में कितने शेरपा कुली थे ?

५) कर्नल खुल्लर ने क्या कहा व क्यों ?

६) लेखिका किसका सामना करना चाहती थी ?

७) कैंप - ३ में कितने लोग थे ?

८) ल्हाटू कौन था ?

प्रश्न - २ निम्न शब्दों के अर्थ लिखो ।

१) आरोहण (२) शंकु (३) उपस्कर (४) विख्यात (५) भौंचक्की

प्रश्न - ३ विलोम शब्द -

१) अनुकूल (२) नियमित (३) निश्चित (४) विख्यात (५) सुन्दर

प्रश्न - ४ कोई १० शब्द अनुनासिक के छांट कर लिखिए ।

प्रश्न - ५ ' मन के हारे हार है , मन के जीते जीत ' विषय पर अनुच्छेद लिखिए ।

प्रश्न - ६ निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

वह तुरंत ही चढ़ाई शुरू करना चाहता था ... और उसने मुझसे पूछा, क्या में उसके साथ जाना चाहूँगी ? एक ही दिन में साउथ कोल से छोटी तक जाना और वापस आना

बहुत कठिन और श्रमसाध्य होगा ! इसके अलावा यदि अंगदोरजी के पैर ठंडे पड़ गए तो

उसके लौट कर आने का भी जोखिम था । मुझे फिर भी अंगदोरजी पर विश्वास था और

साथ - साथ मैं आरोहण की क्षमता और कर्मठता के बारे में भी आश्वस्त थी । अन्य कोई भी व्यक्ति इस समय साथ चलने के लिए तैयार नहीं था ।

१) पाठ तथा लेखिका का नाम लिखिए ।

२) चढ़ाई करते समय अंगदोरजी के पैर ठंडे पड़ने की आशंका क्यों थी ?

३) लेखिका अंगदोरजी का साथ देने को तैयार क्यों हो गई ?

४) अर्थ लिखिए - जोखिम

पाठ - ४ तुम कब जाओगे , अतिथि लेखक - शरद जोशी (१९३१ - ९१)

(पाठ का सार)

प्रसिद्ध व्यंग्यकार शरद जोशी द्वारा लिखित प्रस्तुत पाठ में ऐसे अतिथियों पर व्यंग्य किया गया है , जो बिना सूचना के आ धमकते हैं तथा जाने का नाम तक नहीं लेते | लेखक के घर पर भी मेहमान आने पर उसका आदर -सत्कार किया गया | जब अतिथि ने जाने का नाम नहीं लिया तब सौहार्द धीरे - धीरे बोरियत में परिवर्तित हो गया | लेखक यह सोचने लगा कि होम को स्वीट - होम इसलिए कहा गया है कि लोग दूसरे की स्वीटनेस को काटने न दौड़ें |

प्रश्न - १ शरद जोशी का जन्म कब और कहाँ हुआ ?

प्रश्न - २ निम्न शब्दों को वाक्यों में प्रयोग करो ।

१) निस्संकोच (२) नम्रता (३) मिट्टी (४) पत्रिका (५) बटुआ

प्रश्न - ३ निम्न प्रश्नों के उत्तर दो ।

१) अतिथि कब देवता होता है और कब राक्षस ?

२) लेखक के मन में ' गेट आउट ' कहने की बात क्यों आई ?

३) लेखक को किस बात की आशंका थी ?

४) इस पाठ के माध्यम से लेखक ने क्या सीख दी है ?

५) पाठ में आए शब्दों में से (उ) की मात्रा वाले शब्द ढूँढ कर लिखिए ।

६) निम्नलिखित शब्दों के पर्यायवाची शब्द लिखिए ।

१) चाँद (२) ज़िक्र (३) आघात (४) ऊष्मा (५) अग्नि

७) आशय स्पष्ट करो ।

१) एक देवता और एक मनुष्य अधिक देर तक साथ नहीं रहते ।

२) अन्दर ही अन्दर मेरा बटुआ काँप गया ।

प्रश्न - ४ निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर दिए गए प्रश्नों के उतार लिखिए ।

सत्कार की ऊष्मा समाप्त हो रही थी । डिनर से चले थे , खिचड़ी पर आ गए । अब

भी अगर तुम अपने बिस्तर को गोलाकार रूप नहीं प्रदान करते तो हमें उपवास तक

जाना होगा । तुम्हारे - मेरे संबंध एक संक्रमण के दौर से गुजर रहें हैं । तुम्हारे जाने

यह चरम क्षण है । तुम जाओ न अतिथि !

१) सत्कार की ऊष्मा से क्या अभिप्राय है ?

२) ' तुम अपने बिस्तर को गोलाकार रूप नहीं प्रदान करते तो हमें उपवास तक जाना होगा । ' आशय स्पष्ट कीजिए ।

३) उपवास रखने की बात लेखक ने क्यों सोची ?

४) लेखक व अतिथि के संबंध संक्रमण के दौर से क्यों गुज़र रहे थे ?

Rabindranath World School

पाठ - ६ कीचड़ का काव्य लेखक - काका कालेलकर (१८८५ - १९८२)

(पाठ का सार)

प्रस्तुत पाठ में लेखक ने कीचड़ उपयोगिता का काव्यात्मक शैली में वर्णन किया गया है | लेखक कहता है कि आकाश का,पृथ्वी का जलाशयों का वर्णन तो सभी करते है परन्तु कीचड़ का वर्णन कोई नहीं करता | कीचड़ जब सूख जाता है तब गाय भेड़ इत्यादि के पद चिंह और भी सुन्दर लगते हैं | मनुष्य को अगर इसका ज्ञान होता तो वह कीचड़ को कीचड़ न समझकर उसमें सौन्दर्य को भी देखता |

प्रश्न - १ निम्न शब्दों के ३ - ३ पर्यायवाची शब्द लिखो ।

१) जलाशय (२) सिन्धु (३) पंकज (४) पृथ्वी (५) आकाश

प्रश्न - २ निम्न शब्दों के अर्थ लिखो -

१) पूनी (२) वृत्ति (३) पूर्व (४) कीचड़ (५) कर्दम

प्रश्न - ३ आशय स्पष्ट करो -

‘ नदी किनारे अंकित पदचिन्ह और सींगों के चिन्हों से मानो महिषकुल के भारतीय युद्ध का पूरा इतिहास ही इस कर्दम लेख में लिखा हो ऐसा भास होता है । ‘

प्रश्न - ४ निम्न प्रश्नों के उत्तर दो -

१) कीचड़ में पैदा होने वाली फसलों ने नाम लिखिए ।

२) भारत के मानचित्र पर धान की फसल को प्रान्तों के आधार पर दर्शाओ ।

प्रश्न - ५ संक्षिप्त उत्तर -

१) कीचड़ का रंग किन - किन लोगों को खुश करता है ?

२) कीचड़ कहाँ सुन्दर लगता है ?

३) ‘ पंक ‘ और ‘ पंकज ‘ शब्द में क्या अंतर है ?

४) कीचड़ से क्या होता है ?

५) कवियों की किस धारणा को युक्ति शुन्य कहा गया है ?

Rabindranath World School

पाठ - ७ धर्म की आड़ लेखक - गणेश शंकर विद्यार्थी

(पाठ का सार)

इस पाठ में लेखक ने उन लोगों के इरादों और कुटिल चालों

को बेनकाब किया है , जो धर्म के नाम पर साधारण जनता को अपने स्वार्थ के लिए आपस में लडवाते हैं | शंख बजाने , माला फेरने का नाम धर्म नहीं है | ऐसे लोगों से तो नास्तिक लोग कहीं ज्यादा अच्छे हैं | इसी कारण लेखक कहता है कि हमें मनुष्यत्व को अपनाना चाहिए , पशु - प्रवृत्तियों को छोड़कर इंसानियत को पहचानना चाहिए |

प्रश्न - १ निम्नलिखित उपसर्गों का प्रयोग करके २ - २ शब्द बनाइए ।

१) ला (२) बिला (३) बे (४) बद (५) ना (६) हर (७) गैर (८) खुश

प्रश्न - २ निम्न प्रश्नों के उत्तर दीजिए -

१) कौन - से लोग धार्मिक लोगों से अधिक अच्छे हैं ?

२) धर्म के स्पष्ट चिन्ह क्या हैं ?

३) चलते - पुरज़े लोग धर्म के नाम पर क्या करते हैं ?

४) धर्म के स्पष्ट चिन्ह कौन - से हैं ?

५) ईश्वर किन लोगों से प्यार करेगा ?

प्रश्न - ३ ' भी ' का प्रयोग करते हुए पाँच वाक्य बनाइए ।

प्रश्न - ४ अन्य प्रश्न -

१) ईश्वर को रिश्वत कैसे दी जाती है ?

२) धन की मार क्या है ?

३) मूर्ख क्या करते हैं ?

४) साम्यवाद और बोल्शेविज़्म का जन्म क्यों हुआ ?

५) भारत वर्ष में झगड़े कैसे कम होंगे ?

प्रश्न - ५ हमारे देश में, इस समय, धनपतियों का इतना ज़ोर नहीं है । यहाँ ,धर्म के नाम पर ,

कुछ इने - गिने आदमी अपने हीन स्वार्थों की सिद्धि के लिए , करोड़ो आदमियों की

शक्ति का दुरुपयोग किया करते हैं । गरीबों का धनाढ्यों द्वारा चूसा जाना इतना बुरा

नहीं है , जितना बुरा यह है कि वहां घन की मार , यहाँ है बुद्धि पर मार । वहां धन

दिखा कर करोड़ों को वश में किया जाता है , और फिर मन - माना धन पैदा करने के

लिए जोत दिया जाता है । यहाँ है बुद्धि पर पर्दा डालकर पहले ईश्वर और आत्मा का

स्थान अपने लिए लेना और फिर , धर्म , ईमान , ईश्वर और आत्मा के नाम पर

अपनी स्वार्थ - सिद्धि के लिए लोगों को लड़ाना - भिड़ाना मुर्ख बेचारे धर्म की दुहाईयाँ

देते और दीन - दीन चिल्लाते हैं , अपने प्राणों की बाज़ियाँ खेलते और थोड़े - से

अनियंत्रित और धूर्त आदमियों का आसन ऊँचा करते और उनका बल बढाते हैं । धर्म

और ईमान के नाम पर किए जाने वाले इस भीषण व्यापार को रोकने के लिए साहस

और दृढ़ता के साथ , उद्योग होना चाहिए । जब तक ऐसा नहीं होगा , तब तक

भारतवर्ष में नित्यप्रति बढ़ते जाने वाले झगड़े कम न होंगे ।

१) करोड़ों आदमियों की शक्ति का दुरुपयोग कैसे हो रहा है ?

२) मूर्ख क्या करते हैं ?

३) भारतवर्ष में झगड़े कैसे कम होंगे ?

४) भारत और पश्चिम देशों में क्या अंतर है ?

पाठ - ८ शुक्रतारे के समान लेखक : स्वामी आनंद (१८८७)

(पाठ का सार)

इस पाठ में लेखक ने गांधी जी के निजी सचिव महादेव भाई की बेजोड़ प्रतिभा और उनकी व्यस्ततम दिनचर्या का बड़ा ही बारीकी से वर्णन किया है | महदेव भाई ने सब से पहले सरकार के अनुवाद - विभाग में नौकरी की थी | बड़े -बड़े सिविलियन और गवर्नर कहा करते थे कि सारी ब्रिटिश सर्विस में महादेव के समान अक्षर लिखने वाला कोई खोजने पर भी नहीं मिलता था | गांधी जी की आत्मकथा (सत्य के प्रयोग) का अंग्रेजी अनुवाद इन्होंने ही किया था | वर्धा की असहाय गर्मी में रोज़ाना मीलों पैदल चलने के कारण इनके स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा जो इनकी असमय मृत्यु का कारण बना | शुक्रतारे की ही तरह महादेव भाई भी भारत की स्वतंत्रता के उषाकाल में अचानक अस्त हो गए |

प्रश्न- १ ' इक ' प्रत्यय लगाकर शब्दों का निर्माण कीजिए -

१) सप्ताह (२) साहित्य (३) व्यक्ति (४) राजनीति (५) अर्थ (६) धर्म (७) मास (८) वर्ष

प्रश्न - २ निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए -

१) देश निकाले की सज़ा किसे किसे दी गई ?

२) उन दिनों बम्बई के नेता कौन थें ?

३) महादेव की साहित्यिक दें क्या है ?

४) महादेव भाई की अकाल मृत्यु का कारण क्या था ?

५) महादेव भाई की लिखावट की कोई ४ विशेषताएं लिखो ।

प्रश्न - ३ निम्न शब्दों के अर्थ लिखिए -

१) धुरंधर (२) पेशा (३) आसेतुहिमाचल (४) नक्षत्र - मंडल (५) रूबरू

प्रश्न - ४ मुहावरों का वाक्यों में प्रयोग कीजिए -

१) आड़े हाथों लेना (२) अस्त हो जाना (३) दांतों तले अंगुली दबाना

४) लोहे के चने चबाना (५) मंत्र - मुग्ध करना

प्रश्न - ५ भारत के मानचित्र पर स्थानों को दर्शायें ।

१) अहमदाबाद (२) जलियाँवाला बाग (अमृतसर) (३) कलापानी (अंडमान) (४) दिल्ली

५) शिमला (६) बिहार (७) उत्तरप्रदेश

प्रश्न - ६ आशय स्पष्ट कीजिए -

१) इस पेशे आमतौर पर स्याह को सफ़ेद और सफ़ेद को स्याह करना होता था ।

२) देश और दुनिया को मुग्ध करके शुक्रतारे की तरह ही अचानक अस्त हो गए ।

३) उन पत्रों को देख कर दिल्ली और शिमला में बैठे वाइसराय लंबी साँस - उसाँस लेते

रहते थे ।

Rabindranath World School

पाठ - ९ काव्य खंड रैदास - (१३८८ - १५१८)

(कविता का सारांश)

प्रस्तुत कविता में दो पद हैं , पहले पद में कवि ने अपने आराध्य का स्मरण करते हुए विभिन्न वस्तुओं के माध्यम से अपनी तुलना प्रभु से की है तथा दूसरे पद में प्रभु की दयालुता , उदारता तथा उनके समदर्शी स्वभाव का वर्णन किया है | जगत में जिन लोगों को तिरस्कार मिलता है , भगवान ने उन्हें सहज भाव से अपनाया है | रैदास ने ब्रजभाषा का प्रयोग किया है , जिसमें अवधी , राजस्थानी , खडी बोली और उर्दू - फ़ारसी के शब्दों का भी मिश्रण है|

प्रश्न - १ निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए -

ऐसी लाल तुझ बिनु कउनु करे ।

गरीब निवाजु गुसईआ मेरा माथै छत्रु धरै ॥

जाकी छोती जगत कउ लागै ता पर तुहीं ढरै ।

नीचहु ऊच करै मेरा गोबिंदु काहू ते न डरै ॥

नामदेव कबीरु तिलोचनु सधना सैनु तारै ।

काहि रविदासु सुनहु रे संतहु हरीजिउ ते सभै सरै ॥

१) उपर्युक्त काव्यांश में ईश्वर को कैसा बताया गया है ?

२) ईश्वर की कृपा से किस - किसका उद्धार हुआ है ?

३) कवि का ईश्वर किन्हें गले से लगता है ?

प्रश्न - २ लिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर दिए गए प्रश्नों के सही विकल्पों को चुनकर

लिखिए -

अब कैसे छुटै राम नाम रट लागी ।

प्रभु जी , तुम चंदन हम पानी , जाकी अँग - अँग बास समानी ।

प्रभु जी , तुम घन बन हम मोरा , जैसे चितवत चंद चकोरा ।

प्रभु जी , तुम दीपक हम बाती , जाकी जोति बारै दिन राती ।

प्रभु जी , तुम मोती हम धागा , जैसे सोनहिं मिळत सुहागा ।

प्रभु जी , तुम स्वामी हम दासा , ऐसी भक्ति करै रैदासा ॥

१) उपर्युक्त काव्यांश के रचयिता हैं -

क) रैदास (ख) कबीर (ग) राहीम (घ) बिहारी

२) अनुप्रास अलंकार का उदाहरण है -

क) अँग - अँग (ख) चंद चकोरा (ग) हम पानी (घ) रट लागी

३) यदि प्रभु चंदन है , तो कवि है -

क) घना वन (ख) पानी (ग) वर्षा (घ) चकोर

४) कवी की भक्ति किस प्रकार की है ?

क) दास्य भाव (ख) सख्य भाव (ग) दैन्य भाव (घ) विरह भावना के प्रेरित

५) उपर्युक्त पद में तुकांत शब्द है -

क) जाकी जोति (ख) पानी समानी (ग) दिन राती (घ) करै रैदासा

Mahindramath World School

प्रश्न - ३ रैदास ने कैसी भाषा - शैली का इस्तेमाल किया है ?

प्रश्न - ४ रैदास को किसने दिल्ली आने का निमंत्रण दिया और क्यों ?

प्रश्न - ५ रैदास स्वयं को क्या मानते हैं ?

प्रश्न - ६ कविता में कौन - सी भाषा का प्रयोग किया है ?

प्रश्न - ७ ' गरीब निवाजु ' शब्द का अर्थ स्पष्ट कीजिए ।

प्रश्न - ८ रैदास ने अपने स्वामी को किन - किन नामो से पुकारा है ?

प्रश्न - ९ ईश्वर अपनी कृपा किस पर बरसाता है ?

प्रश्न - १० ' लाल ' शब्द किसके लिए प्रयुक्त हुआ है ?

प्रश्न - ११ संत रैदास का जीवन परिचय लिखो ।

प्रश्न - १२ निम्न शब्दों के अर्थ बताओ -

१) सभै सरै (२) गुसईआ (३) रती (४) बारै (५) चितवत

प्रश्न - १३ निम्नलिखित का भाव स्पष्ट करो -

१) जाकी जोति बारै दिन राती (२) ऐसी लाल तुझ बिनु कउनु करे

३) जैसे चितवत चंद चकोरा (४) जाकी अँग - अँग बास समानी

Rabindranath World School

पाठ - १० दोहे रहीम (१५५६ - १६२६)

(कविता का सारांश)

मध्ययुगीन दरबारी संस्कृति के प्रतिनिधि कवि रहीम ने अपने नीतिपरक दोहों में मानव - मात्र को करणीय और अकरणीय आचरण की नसीहत दी है | कवि ने दोहों की विशेषता बताते हुए मनुष्यों को परोपकारी बनने की प्रेरणा दी है | कवि ने मीठी वाणी , हर छोटी - से - छोटी वस्तु , निज सम्पत्ति तथा पानी की महत्ता को भी विभिन्न दृष्टान्त देकर सिद्ध किया है |

प्रश्न - १ निम्नलिखित काव्यांशों को ध्यानपूर्वक पढ़कर दिए गए प्रश्नों के सही विकल्पों को चुनकर लिखिए -

रहिमन धागा प्रेम का , मत तोड़ो चटकाए

टूटे से फिर न मिले , मिले गाँठ परि जाय ॥

रहिमन निज मन की बिथा , मन ही राखो गोय ।

सुनि अठिलैहैं लोग सब , बाँटि न लैहैं कोय ॥

१) कवि ने प्रेम की तुलना किससे की है ?

क) सूत्र से (ख) रस्सी से (ग) रबड़ से (घ) मन से

२) उपर्युक्त दोहे किस प्रकार के हैं ?

क) श्रृंगारपरक (संयोग श्रृंगार से संबंधित) (ख) श्रृंगारपरक (वियोग श्रृंगार से संबंधित)

ग) नीतिपरक (घ) भक्तिपरक

३) ' बिथा ' का तत्सम रूप है -

क) ब्यथा (ख) बीथा (ग) बिपति (घ) विपत्ति

४) ' गोय ' का अर्थ है -

क) छिपाना (ख) ढूँढना (ग) प्रकट करना (घ) हँसना

५) मन की पीड़ा का क्या करना चाहिए ?

क) लोगों को बताना चाहिए (ख) अपने मित्रों को बताना चाहिए

ग) अपने मन में ही रखना चाहिए (घ) अपने मन - मस्तिष्क में ही रखना चाहिए

प्रश्न - २ निम्न शब्दों के अर्थ लिखिए -

१) गोय (२) बिथा (३) बिगरी (४) थोरे (५) सींचिबो

प्रश्न - ३ कौन - से मनुष्य पशु से बद्तर हैं ?

प्रश्न - ४ पेड़ किस प्रकार फलता - फूलता है ?

प्रश्न - ५ अवध नरेश को कहाँ रहना पड़ा था ?

प्रश्न - ६ अनुप्रास अलंकार का कोई एक उदाहरण दो ।

प्रश्न - ७ मृग की प्रशंसा कवि ने किस उद्देश्य से की है ?

प्रश्न - ८ ' नरेश ' शब्द के दो पर्यायवाची शब्द लिखो ।

प्रश्न - ९ पंक जल क्यों अच्छा है ?

प्रश्न - १० समुद्र क्यों महान नहीं है ?

प्रश्न - ११ एकदम से ऊपर कौन व कैसे चढ़ जाता है ?

प्रश्न - १२ ' जलज ' के कोई चार पर्यायवाची शब्द लिखो ?

प्रश्न - १३ ' तरवारि ' का प्रचलित रूप क्या है ?

प्रश्न - १४ संकटकाल में व्यक्ति का सहायक कौन होता है ?

प्रश्न - १५ निम्नलिखित का भाव स्पष्ट करो ।

१) टूटे से फिर ना मिले ,

मिले गाँठ परि जाए ।

२) रहिमन मूलहिं सींचिबी ,

फूलै फलै अघाय ।

३) पानी गए न ऊबरै ,

मोती , मानुष , चून ।

४) रहीम का जीवन परिचय लिखो ।

Rabindranath World School

पाठ - ११ नज़ीर अकबराबादी (१७३५ - १८३०)

(आदमी नामा)

(कविता का सारांश)

प्रस्तुत नज्म में कवि ने आदमी के कई रूपों का वर्णन किया है | कोई आदमी बादशाह होता है तो कोई दरिद्र , कोई मालदार तो कोई कमजोर , कोई जान लेता है तो कोई बचाता है |

कोई अपने सुकर्मों के कारण अच्छा कहलाता है तो कोई कुकर्मों के कारण बुरा कहलाता है | हर व्यक्ति अपने मन की इच्छा के अनुसार कार्य करके अच्छा या बुरा कहलाता है

प्रश्न - १ निम्नलिखित काव्यांशों को ध्यानपूर्वक पढ़कर दिए गए प्रश्नों के सही विकल्पों चुनकर

लिखिए -

दुनिया में बादशाह है सो है वह भी आदमी

और मुफ़लिस - ओ - गदा है सो है वो भी आदमी

ज़रदार बेनवा है सो है वो भी आदमी

निअमत जो खा रहा है सो है वो भी आदमी

टुकड़े चबा रहा है सो है वो भी आदमी

१) उपर्युक्त काव्यांश के कवि हैं -

क) नज़र अकबराबादी (ख) नज़ीर अकबराबादी (ग) नज़ीर सिकंदराबादी (घ) मिर्ज़ा ग़लिब

२) कवि के अनुसार , यदि कोई व्यक्ति राजा है , तो कोई ..... है ।

क) दीन - दरिद्र (ख) वज़ीर (ग) धनी (घ) प्रजा

३) ' ज़रदार ' का अर्थ है -

क) वृद्ध व्यक्ति (ख) दौलतमंद व्यक्ति (ग) निर्धन व्यक्ति (घ) लाचार व्यक्ति

४) ' निअमत खाने वाला ' किसका प्रतीक है ?

क) धनी व्यक्ति का (ख) परोपकारी व्यक्ति का (ग) साहसी व्यक्ति का

घ) स्वार्थी व्यक्ति का

५) ' टुकड़े चबा रहा है ' - इस बात का द्योतक है -

क) कुछ लोग चावल नहीं खाते , केवल रोटी ही खाते हैं

ख) कुछ लोगों की किस्मत में सूखी रोटी के टुकड़े चबाना ही लिखा है

ग) कुछ लोग दूसरों के टुकड़ो पर ही पलते हैं

घ) कुछ लोग रिश्वत लेते हैं

प्रश्न - २ निम्न के संक्षिप्त उत्तर दो -

१) कविता में ' नज़ीर ' शब्द का क्या अर्थ है ?

२) ' कारे ' का क्या अर्थ है ?

३) कविता में ' आदमी ' शब्द की पुनरावृत्ति किस उद्देश्य से की है ?

४) कविता के अनुसार अच्छा काम करने वाला क्या कहलाता है ?

५) आदमी का आचरण कैसा होना चाहिए ।

प्रश्न - ३ विस्तार से उत्तर दो -

१) आदमी का एक रूप क्रूर है और दूसरा सहृदय । उदाहरण द्वारा स्पष्ट करो ।

२) आदमी नामा कविता का प्रतिपादय लिखो ।

प्रश्न - ४ निम्न शब्दों का लिखकर वाक्य बनाओ ।

१) बादशाह (२) मुफ़लिस (३) नज़ीर (४) अशराफ़ (५) दिल

पाठ - १२ एक फूल की चाह

कवि - सियाराम शरण गुप्त (१८९५ - १९६३)

(कविता का सारांश)

एक फूल की चाह एक अति लोकप्रिय कविता है | इस कविता में छुआछूत की समस्या को दर्शाया गया है | एक अछूत सुखिया नाम की कन्या के मन में अचानक यह इच्छा जगी कि कोई उसे माँ के चरणों में अर्पित किया हुआ फूल लाकर दे | उसका पिता अपनी बेटी की इच्छा को पूरा करने के मंदिर में पहुँचा लेकिन वह भक्तों की नज़र में खटकने लगा | अछूत होने के कारण लोगों ने उसे खूब पीटा और जेल में डलवा दिया | इसी दौरान उसकी बेटी मर गई , वह अंतिम समय उसे गोद में भी नहीं ले सका | इस तरह से छुआछूत की समस्या , वर्ग - भेद , सामाजिक कुरीतियों इत्यादि के परिणामों को दर्शाना इस कविता का संदेश है , प्रतिपाद्य है |

१) माँ के भक्त हुए तुम कैसे ,

करके यह विचार खोटा ?

माँ के सम्मुख ही माँ का तुम

गौरव करते हो छोटा !

कुछ न सुना भक्तों ने , झट से

मुझे घेर कर पकड़ लिया ;

मार - मार कर मुक्के - घूँसे

धम - से नीचे गिरा दिया !

क) काव्यांश में माँ कौन है ?

ख) पिता भक्तों को क्या कहना चाहता था ?

ग) भक्तों ने किसे घेरा ?

घ) काव्यांश में किस खोटे विचार के बारे में कहा है ?

ङ) गौरव के समान अर्थवाला शब्द कौन - सा है ?

२) देख रहा था - जो सुस्थिर हो

नहीं बैठती थी क्षण - भर ,

हाय ! वही चुपचाप पड़ी थी

अटल शांति - सी धारण कर ।

सुनना वही चाहता था मैं

उसे स्वयं ही उकसाकर -

मुझको देवी के प्रसाद का

एक फूल ही दो लाकर !

क) सुखिया का स्वभाव कैसा था ?

ख) सुखिया में क्या बदलाव आ गया ?

ग) पिता बेटी को उकसाकर क्या सुनना चाहता था ?

घ) काव्यांश का भाव क्या है ?

प्रश्न - ३ निम्न शब्दों के अर्थ लिखो -

क) अविश्रांत (ख) प्रचंड (ग) मृतवत्सा (घ) नितांत (ङ) रव

प्रश्न - ४ निम्न की व्याख्या लिखो -

१) पद -

सभी ओर दिखलाई दी बस

अंधकार की ही छाया ,

छोटी - सी बच्ची को ग्रसने

कितना बड़ा तिमिर आया ।

ऊपर विस्तृत महाकाश में

जलते - से अंगारों से ,

झुलसी - सी जाती थी आँखें

जगमग जगते तारों से ।

२) पद -

अंतिम बार गोद में बेटी

तुझको ले न सका मैं हा !

एक फूल माँ का प्रसाद भी

तुझको दे न सका मैं हा !

प्रश्न - ५ महिमा शब्द का प्रयोग किसके लिए किया गया है ?

प्रश्न - ६ काव्यांश में किसके कलुष का वर्णन है ?

प्रश्न - ७ ' मृदु - मधुर ' में कौन - सा अलंकार है ?

प्रश्न - ८ भक्त वृन्द किस भावना से गा रहा था ?

प्रश्न - ९ मंदिर के कलश किसके बने थे ?

प्रश्न - १० प्रस्तुत काव्यांश में किसका वर्णन है ?

Rabindranath World School

पाठ - १४ अग्निपथ हरिवंश राय बच्चन (१९०७ - २००३)

(कविता का सारांश)

प्रस्तुत कविता में कवि ने मनुष्य के संघर्षमयी जीवन को अग्नि पथ कहा है । उन्होंने

इस कविता में कहा है कि अग्नि पथ पर बढ़ते हुए मनुष्य को राह में सुख की चाह न

कर , बिना रुके , बिना विश्राम किए अपनी मंजिल की ओर कर्मठता के साथ बढ़ते ही

जाना चाहिए| कवि ने शब्दों की पुनरावृत्ति द्वारा मनुष्य को अपनी दृढ़ता पर डटे रहने

तथा बिना विचलित हुए अपनी राह पर अग्रसर होने की प्रेरणा दी है अर्थात् यह जीवन

फूलों की नहीं , बल्कि काँटों की शैया है , जिस पर मनुष्य को हर प्रतिकूल परिस्थिति

का सामना करते हुए, बिना पीछे मुड़े अपने लक्ष्य को प्राप्त करना चाहिए । ऐसी बातों

को दर्शाना ही इस कविता का मूल मंत्र है ।

अर्थबोध संबंधी प्रश्न -

निम्नलिखित काव्यांशो को पढ़कर दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए -

२) तू न मुड़ेगा कभी ! - कर शपथ , कर शपथ , कर शपथ !

अग्नि पथ ! अग्नि पथ ! अग्नि पथ !

यह महान दृश्य है -

चल रहा मनुष्य है

अश्रु - स्वेद - रक्त से लथपथ , लथपथ , लथपथ !

अग्नि पथ ! अग्नि पथ ! अग्नि पथ !

क) मुड़ने से क्या अभिप्राय है ?

ख) महान दृश्य क्या है ?

ग) ' अश्रु - स्वेद - रक्त से लथपथ ' का आशय क्या है ?

घ) मनुष्य की किस विशेषता पर प्रकाश डाला गया है ?

३) अग्नि पथ ! अग्नि पथ ! अग्नि पथ !

वृक्ष हों भले खड़े

हों घने , हों बड़े ,

एक पत्र - छाँह भी माँग मत , माँग मत , माँग मत !

अग्नि पथ ! अग्नि पथ ! अग्नि पथ !

तू न थकेगा कभी !

तू न थमेगा कभी !

तू न मुड़ेगा कभी ! - कर शपथ , कर शपथ , कर शपथ !

क) छाया माँगने का क्या अर्थ है ?

ख) काव्यांश में ' तू ' कौन है ?

ग) ' अग्नि पथ ' का आशय क्या है ?

घ) छाँह माँगने से मना क्यों किया गया है ?

ङ) कवि क्या शपथ लेने के लिए कह रहा है ?

४) तू न थकेगा कभी !

तू न थमेगा कभी !

तू न मुड़ेगा कभी ! - कर शपथ , कर शपथ , कर शपथ !

अग्नि पथ ! अग्नि पथ ! अग्नि पथ !

यह महान दृश्य है -

चल रहा मनुष्य है

अश्रु - स्वेद - रक्त से लथपथ , लथपथ , लथपथ !

अग्नि पथ ! अग्नि पथ ! अग्नि पथ !

क) कवि किसके न थमने और न थमने की बात कर रहा है ?

ख) काव्यांश में अग्नि पथ का अर्थ क्या है ?

ग) कवि कैसी शपथ करने के लिए कहता है ?

घ) ' महान दृश्य ' कैसा है ?

५) कवि क्या माँगने के लिए मना कर रहे हैं ?

६) ' एक पत्र छाँह ' किसका प्रतीक है ?

७) ' तू न मुड़ेगा कभी ' से कवि का क्या आशय है ?

८) कवि क्या शपथ दिलाता है ?

९) अग्नि पथ किसे कहा है और क्यों ?

१०) कवि की ' किन्ही ' चार रचनाओं के नाम लिखो ?

Rabindranath World School

पाठ - १५ १. नए इलाके में कवि - अरुण कमल (१९५४)

२. खुशबू रचते हैं हाथ

(कविता का सारांश)

प्रथम कविता में कवि ने दुनिया के अस्थायी रूप का वर्णन किया है | शहरीकरण के कारण जीवन - यापन में नए -नए परिवर्तन आ रहे हैं | पुरानी स्मृतियों के सहारे अपनी मंजिल तक नहीं पहुँचा जा सकता क्योंकि नित्य नए -नए निर्माण कार्य हो रहे हैं | मनुष्य के पास समय बहुत कम है परन्तु उसकी गति बहुत तेज़ है | हर पल बनती - बिगडती दुनिया में स्मृतियों के भरोसे जी नहीं सकते | ऐसी बातों को दर्शाना ही इस कविता का प्रतिपाद्य है |

दूसरी कविता में कवि ने सामाजिक विषमताओं का पर्दाफाश किया है | यह कैसी विडंबना है कि जो वर्ग समाज के लिए सौन्दर्य की सृष्टि करता है , वही वर्ग अभावों में , अत्यधिक गंदगी भरे माहौल में अपना जीवन यापन करता है | सभी के घरों में सुगंध बिखेरने वाले ये लोग समाज में उपेक्षित हैं | ऐसी बातों को दर्शाकर कवि ने सरकार , समाज आदि को झकझोरा है , उनके सही कर्तव्य को चेताया है | यही इस कविता का मुख्य उद्देश्य है |

प्रश्न - १ निम्नलिखित काव्यांशो को पढ़कर दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए -

कई गलियों के बीच

कई नालों के पार

कूड़े - करकट

के ढेरों के बाद

बदबू से फटते जाते इस

टोले के अन्दर

खुशबू रचते हैं हाथ

खुशबू रचते हैं हाथ ।

उभरी नसोंवाले हाथ

घिसे नाखूनोंवाले हाथ

पीपल के पत्ते - से नए - नए हाथ

जूही की डाल - से खुशबूदार हाथ ।

क) खुशबू रचनेवाले हाथ कहाँ रहते हैं ?

ख) खुशबू रचने से क्या अभिप्राय है ?

ग) ' उभरी नसोंवाले हाथ ' से किनकी ओर संकेत है ?

घ) खुशबूदार हाथों की तुलना किस - से की गई है ?

प्रश्न - २ शब्दों के अर्थ बताओ -

१) पतझड़ (२) मुल्क (३) मशहूर (४) स्मृति (५) भादों

प्रश्न - ३ कवि अपने घर का रास्ता क्यों भूल जाता है ?

प्रश्न - ४ कवि को खाली ज़मीन के टुकडे के बाद कहाँ मुड़ना था ?

प्रश्न - ५ मशहूर अगरबत्तियां बनाने वाले लोग कैसे हैं ?

प्रश्न - ६ ' मुल्क ' के पर्यायवाची शब्द लिखो ।

प्रश्न - ७ ' खुशबू ' के दो पर्यायवाची शब्द लिखो ।

प्रश्न - ८ खुशबू रचते हैं हाथ कविता लिखने का कवि का मुख्य उद्देश्य क्या है ?

प्रश्न - ९ ' समय की कमी ' से क्या तात्पर्य है ? कविता के आधार पर स्पष्ट कीजिए ।

Rabindranath World School

(संचयन)

(पाठ - 1)

गिल्लू (महादेवी वर्मा)

1) महादेवी वर्मा की किन्हीं चार रचनाओं के नाम लिखिए ?

2) गिलहरी का नाम गिल्लू कैसे पड़ा ?

3) भूख लगने पर गिल्लू किस तरह का संकेत देता था ?

4) गिल्लू का प्रिय खाद्य पदार्थ क्या था ?

5) हमें जीव - जंतुओं के प्रति संवेदनशील होना चाहिए , इस कथन में अपने विचार लिखिए |

6) गिल्लू को मुक्त करने की आवश्यकता लेखिका ने कब महसूस की ? इसके लिए उन्होंने

क्या उपाय किया ?

7) गिल्लू महादेवी को चौंकाने के लिए क्या करता था ?

8) महादेवी वर्मा पशु - प्रेमी थी , इस संस्मरण के आधार पर लिखिए |

(पाठ - 2)

स्मृति (श्रीराम शर्मा)

1) कुएँ वाली घटना सुन कर लेखक की माँ ने क्या प्रतिक्रिया की ?

2) लेखक के विषय में कुछ पंक्तियाँ लिखिए |

3) लेखक व उनकी टोली का रोज़ का कार्यक्रम क्या था और क्यों ?

4) लेखक बहादुर है , पाठ के आधार पर लिखिए |

5) लेखक लो अपने डंडे से अत्यधिक मोह क्यों था ?

(पाठ - 5)

हामिद खां (एस. के. पोट्टेकाट)

1) हामिद खां कौन था ?

2) उसे लेखक की किन बातों पर विश्वास नहीं हुआ ?

3) तक्षशीला में आगज़नी की ख़बर पढ़कर लेखक के मन में क्या विचार आया ?

4) हामिद खां की कोई 2 विशेषता लिखिए ?

5) हामिद खां एक शांतिप्रिय व्यक्ति था | क्या आप इस कथन से सहमत हैं ?

6) हामिद खां ने पैसे लेने से क्यों मना कर दिया ?

7) लेखक की मुलाकात हामिद खां से कब और किन परिस्थितियों में हुई थी ?

(पाठ - 6)

दिये जल उठे (मधुकर उपाध्याय)

1) दिये जल उठे पाठ में आई 105 साल की वृद्ध महिला के बारे में 20 - 25 शब्दों में लिखिए |

2) गांधी जी के पार उतरने पर भी लोग नदी तट पर क्यों खड़े रहे ?

3) महिसागर नदी के दोनों किनारों पर कैसा दृश्य उपस्थित था ? वर्णन करो |

4) जज को फैसला लिखने में इतना समय क्यों लगा ?

5) पटेल ने ऐसा क्यों कहा कि, " मैं चलता हूँ , अब आपकी बारी |'

6) गांधी जी की कोई 5 विशेषताएँ लिखिए |

7) इस पाठ की पृष्ठभूमि क्या है ?

Rabindranath World School

Rabindranath World School